7

मुख्य वचनः मत्ती 20:6, 7

मनाए जाने का दिन

कलीसिया के आरम्भिक दिनों से, मसीहियों के लिए प्रभु भोज लेने का दिन रविवार ही ठहराया गया ''सप्ताह का पहला दिन'' (प्रेरितों 20:7)। निश्चय ''रोटी तोड़ना'' प्रेरितों 20:7 में लिखा गया कुछ और नहीं बल्कि प्रभु भोज ही है।[1]

''सप्ताह का पहला दिन'' ''सब्त का दिन नहीं'' बल्कि सब्त के अगला दिन था, जो पवित्र शास्त्र में कई जगह मिलता है (देखें मत्ती 28:1; मरकुस 16:1, 2; लूका 23:56; 24:1)। ना तो पवित्र शास्त्र और न की कोई ऐतिहासिक दस्तावेज यह बताते हैं प्रभु-भोज सब्त के दिन लिया जाता था! बल्कि आरम्भिक इतिहास से भी यही पता चलता है कि रविवार ही वह दिन था जिस दिन मसीही लोग मिलकर प्रभु-भोज लेते थे।

सब्त-मानना

सब्त का दिन किसी भी तरह यीशु की मृत्यु या जी उठने से नहीं हुआ, लेकिन यह इन दोनों घटनाओं के बीच का दिन था। यहूदी सब्त का दिन परमेश्वर द्वारा मिस्र की गुलामी से छुड़ाए जाने (व्यवस्थाविवरण 5:15) की याद में मनाते थे। मिस्र छोड़ने के बाद, न कि पहले परमेश्वर ने उन्हें सीनै पर्वत पर सब्त की वाचा दी। नहेम्याह ने इस खास मौके को इस्राएल के इतिहास में गिना।

> फिर तू ने सीनै पर्वत पर उतर कर आकाश में से उनके साथ बातें की, और उनको सीधे नियम, सच्ची व्यवस्था, और अच्छी विधियां, और आज्ञाएं दीं। उन्हें अपने पवित्र विश्राम दिन का ज्ञान दिया, और अपने दास मूसा के द्वारा आज्ञाएं और विधियां और व्यवस्था दीं (नहेम्याह 9:13, 14)।

इस पद्यांश से सब्त से जुड़ी कई सच्चाइयां साफ होती; यह वाचा इस्राएल के लोगों अब्राहम के वश के साथ सीनै पर्वत पर मूसा द्वारा बांधी गई (नहेम्याह 9:7, 8, 13, 14)। परमेश्वर ने मूसा के द्वारा कहा:

> इस बात को स्मरण रखना कि मिस्र देश में तू आप दास था, और वहां से तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल लाया; इस कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे विश्राम दिन मानने की आज्ञा देता है (व्यवस्थाविवरण 5:15)।

परमेश्वर ने न तो सब्त के दिन आराधना की ओर न ही इस्राएलियों को ऐसा करने के लिए कहा। उसने इस्राएल को सातवां दिन आराम के लिए दिया, क्योंकि उसने भी, इस आराम किया

था (निर्गमन 20:11)। सब्त उसके द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी की रचना करने की खुशी में आराधना का दिन नहीं था। लोगों के लिए सब्त की आज्ञाओं का पालन करना जरूरी था:

- उन्हें अपने घरों से बाहर नहीं निकलना था (निर्गमन 16:29 ख)।
- उनकी पीढ़ियों को भी सब्त को मानना था (निर्गमन 31:12, 13, 16)।
- उन्हें यह स्मरण रखना था कि यह दिन परमेश्वर और इस्राएलियों के लिए चिह्न है (निर्गमन 31:13)।
- काम न करके उन्हें इस दिन को पवित्र रखना था (निर्गमन 31:14; व्यवस्थाविवरण 5:12-15; यिर्मयाह 17:24)।
- उन्हें किसी भी तरह का काम करके इस दिन का उल्लंघन नहीं करना था (निर्गमन 31:14; 35:2)।
- यदि कोई भी सब्त के दिन काम करें तो उन्हें उसको मार डालना था (निर्गमन 31:14, 15; 35:2)।
- उन्हें सब्त को परमेश्वर और इस्राएल के बीच वाचा के रूप में मानना था (निर्गमन 31:16)।
- उन्हें इस दिन आराम का दिन मानकर इसका आदर करना था (निर्गमन 35:2)।
- उन्हें कोई आग नहीं जलानी थी (निर्गमन 35:3)।
- मैदे की बारह रोटियों को दो पंक्तियों में सोने की मेज़ पर अति पवित्र स्थान पर महायाजक द्वारा रखा जाना चाहिए था (लैव्यव्यवस्था 24:5-8)।
- याजकों को अनबलि और अर्ग देना और दो मेम्ने बलिदान करना होता था (गिनती 28:1-9)।
- लोगों को यह ध्यान रखना था कि मिस्र में परमेश्वर ने उन्हें दासता से छुड़ाया था (व्यवस्थाविवरण 5:15)।
- नगर के फाटक बन्द रखे जाने थे, ताकि कोई कारोबार न हो सके (नहेम्याह 13:19-21; यिर्मयाह 17:24)।

पुराने या नये नियम की कोई आयत यह नहीं कहती कि कोई व्यक्ति भी आराधना के लिए विशेष दिन के रूप में या प्रभु-भोज मनाने के लिए सब्त के दिन मिलता था। इसके बजाय विश्राम के लिए और यह याद रखने के लिए कि अपनी बड़ी सामर्थ के द्वारा परमेश्वर ने उन्हें मिस्र की दासता से छुड़ाया था यह इस्राएल का विशेष यादगारी दिन था (व्यवस्थाविवरण 5:15)। इसी कारण परमेश्वर ने इस्राएल के मिस्र से निकलने और सीनै पर्वत तक पहुंचने तक मूसा के द्वारा सब्त को नहीं बताया था (नहेम्याह 9:13, 14)। निकलने से पहले वे मिस्र से निकाले जाने को कैसे याद रख सकते थे।

अधिकतर मसीही लोग इस्राएल के वंशज़ नहीं हैं, अर्थात उन्हें मिस्र की दासता से नहीं छुड़ाया गया था जिस कारण हमारे लिए इसका कोई अर्थ नहीं है। मसीही लोगों के लिए विशेष दिन रविवार अर्थात सप्ताह का पहला दिन। अपने पाप से छुटकारे और यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा नये आत्मिक जीवन में अपने प्रवेश को स्मरण रखने के लिए हम इसी दिन

इकट्ठा होते थे। परमेश्वर की सब्त की वाचा केवल इस्राएलियों के लिए थी (निर्गमन 31:13, 16), जिस कारण सब्त को मानने के सम्बन्ध में हमें दूसरों को अपना न्याय नहीं करने देना चाहिए (कुलुस्सियों 2:16)।

ऐतिहासिक लेखों पर विचार करने के बाद ऐवरट फर्ग्यूसन ने निष्कर्ष निकाला:

> आरम्भिक मसीही लोगों के आराधना के दिन का प्रमाण स्पष्ट है, और इसमें कोई गलती नहीं है। वे यहूदियों की तरह सातवां दिन अर्थात सब्त का दिन नहीं मनाते, बल्कि सप्ताह के पहले दिन अर्थात मसीह के जी उठने के दिन इकट्ठा होते थे।[2]

विचाराधीन ऐतिहासिक जानकारी का यह मान्य अवलोकन है। मसीहियत के आरम्भिक दिनों से तीसरी शताब्दी तक और शायद बाद तक, प्रभु-भोज केवल रविवार को दिया जाता था, न कि इस दिन या सप्ताह के हर दिन।

सप्ताह का पहला दिन, अर्थात यीशु का दिन

आरम्भिक मसीही लोगों के इसलिए जाने के सम्बन्ध में नये नियम की शिक्षा से कुछ निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं:

- वे इकट्ठा होते थे (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 11:18, 20, 33, 34)।
- वे एक विशेष दिन इकट्ठा होते थे (देखें इब्रानियों 10:25)।
- वे एक विशेष दिन को ''प्रभु का दिन'' के रूप में जानते थे (प्रकाशितवाक्य 1:10)।
- वे सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा होते थे (प्रेरितों 20:7)।
- वे सप्ताह के पहले दिन प्रभु-भोज मनाते थे (प्रेरितों 20:7)।
- वे सप्ताह के पहले दिन चन्दा करते थे (1 कुरिन्थियों 16:2)।

रविवार अर्थात सप्ताह का पहला दिन प्रभु-भोज के मनाए जाने का प्रभु का विशेष दिन था। यूहन्ना ने लिखा, ''मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया'' (प्रकाशितवाक्य 1:10क)। अन्य अभिव्यक्तियों की तरह ''प्रभु का दिन'' को ही उसी अर्थ में समझा जाए जिसमें इतिहास के वह समय में इसका इस्तेमाल होता था। आरम्भिक मसीही लेखक यीशु के विजयी पुनरुत्थान के दिन की बात करने के लिए ''प्रभु का दिन'' (*te kuriake hemera*) नये नियम का इस्तेमाल करते हैं। इसका इस्तेमाल रविवार अर्थात सप्ताह के पहले दिन होता है।

इस संदर्भ में ''प्रभु का'' सम्बन्धवाचक संज्ञा नहीं, बल्कि एक विशेषण है, जिसका अर्थ है प्रभु के सम्मान में एक दिन। इसी विशेषण का इस्तेमाल ''प्रभु-भोज'' (1 कुरिन्थियों 11:20)[3] अर्थात प्रभु के सम्मान में भोज में किया गया था। प्रकाशितवाक्य 1:10 में अक्षरश: अनुवाद ''शाही दिन'' है। एक इन्टरलीनियर बाइबल की एक टिप्पणी इस अनुवाद के दिए जाने का कारण समझाने के लिए 1 कुरिन्थियों 11:20 की बात करती है[4]: ''प्रभु का दिन'' अभिव्यक्ति का इस्तेमाल पहली बार इकट्ठा होने के उनके विशेष दिन के रूप में बताने के लिए आरम्भिक कलीसिया द्वारा किया जाता था।

> बेशक कुछ लोगों ने बहस की है कि यह न्याय के दिन के लिए [पुराने नियम] और [नये नियम] में बार-बार इस्तेमाल होने वाले ''प्रभु का दिन'' के लिए वैकल्पिक नाम मात्र है ... , अधिकतर विद्वानों का निष्कर्ष है कि यह रविवार को कहा गया है। ... यह निष्कर्ष आरम्भिक गैर बाइबली मसीही लेखों में ... रविवार की बात करने के लिए बार बार ''प्रभु का दिन'' के इस्तेमाल से साबित होता है।[5]

> ... मसीही लोगों द्वारा सप्ताह के पहले दिन का विशेष रूप से मनाया जाना [1 कुरिन्थियों 16:2, प्रेरितों 20:7] में मनाए जाने का संकेत मिलता है। [प्रकाशितवाक्य 1:10] सबसे पुराना है, जिसमें इसे प्रभु का दिन कहा गया है, पर जिस प्रकार से यहां इस नाम का इस्तेमाल हुआ है वह दिखाता है कि यह एक स्थापित पदनाम है और इस कारण प्रेरितों के बाद के आरम्भिक लेखकों में मिलता है।[6]

प्रकाशितवाक्य 1:10 में ''प्रभु का दिन'' वाक्यांश को पुराने नियम के ''यहोवा का दिन'' से न उलझाया जाए।[7] न ही इसे नये नियम के ''प्रभु के दिन'' की उस अभिव्यक्ति से न उलझाया जाए जो परमेश्वर के न्याय और क्रोध की बात करती है।[8]

> वह दृश्य ... की [यूहन्ना ने] अपने आपको न्याय के दिन में बचाए जाने की कल्पना की, कहीं और पाए जाने वाले प्रभु के दिन शब्द के मेल खाते अर्थ से उलट है, और यहां दिए गए दर्शन के विषय वस्तु से भिन्न है।[9]

सप्ताह के पहले दिन (प्रेरितों 20:7), जो कि ''प्रभु का दिन'' अर्थात शाही दिन (प्रकाशितवाक्य 1:10), मसीही लोग ''शाही'' भोज के साथ अपने राजा के स्मरण और उसके सम्मान में ''रोटी तोड़ने'' के लिए इकट्ठा होते थे। ''रोटी तोड़ना'' और ''भोज'' दोनों का इस्तेमाल भोजन के रूप में होता था। उत्तर देने के लिए प्रश्न यह है कि यह किसका भोजन ? है। स्पष्टतया ''रोटी तोड़ना'' से लूका का अभिप्राय प्रभु-भोज था, जैसा कि कुरिन्थुस के लोगों के नाम अपने पत्र में पौलुस ने कहा (1 कुरिन्थियों 11:20)।

संदर्भ और व्याकरण के अनुसार अंग्रेज़ी भाषा का ''द'' ब्रेकिंग ऑफ़ ब्रेड (प्रेरितों 2:42) आराधना की अन्य गतिविधियों अर्थात प्रेरितों की शिक्षा और संगति और प्रार्थनाओं से सम्बन्धित विशेष व्यवहार है। निश्चित उपपद ''द'' (tou) किसी सामान्य भोजन के लिए नहीं बल्कि रोटी के विशेष तोड़ने की बात है। प्रेरितों 2:46 में अंग्रेज़ी भाषा में कोई निश्चित उपपद नहीं मिलता जिसका अर्थ है कि वहां पर ''रोटी तोड़ना'' प्रभु का विशेष भोजन नहीं बल्कि मसीही लोगों के घरों में पाया जाने वाला आम भोजन था।

सप्ताह के पहले दिन चेले ''रोटी तोड़ने'' के लिए इकट्ठा होते थे न कि पौलुस का प्रचार सुनने (प्रेरितों 20:7)। परन्तु वह उन्हें वचन सुनाने के अवसर का लाभ उठाता था। त्रोआस में उसने रविवार से लेकर वीरवार तक यानी सात दिन तक प्रतीक्षा की (प्रेरितों 20:6), ताकि वह उनके साथ इकट्ठा हो सके। इस समय से पहले वह उसने कई बार आम भोजन खाया होगा और कई सदस्यों के घरों में गया होगा पर वह प्रति बार से पहले उनके साथ इकट्ठा नहीं हुआ जो कि प्रभु-भोज को मनाने के लिए कलीसिया के रूप में उनके इकट्ठा होने का दिन था।

त्रोआस की आराधना शनिवार शाम को नहीं हुई जैसा कि NEB में है। त्रोआस एक रोमी बसती थी इस कारण वहां के लोग रोमी समय को मानते थे। समय की रोमी गणना के अनुसार रविवार का दिन सूर्यास्त से यानी सायं (6:00 बजे) से होता था। रोमी समय के अनुसार रविवार का आरम्भ आधी रात से होता था। दोनों ही तरह से मसीही लोग रविवार को यानी सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा होते थे।

सप्ताह के दिनों के विषय में यहूदी शब्दावली की समझ न रखने वाले कुछ लोगों ने निष्कर्ष निकाला है कि मसीही लोग सब्त के दिन इकट्ठा होते थे (प्रेरितों 20:7)। ''*Mia ton sabbaton*'' अक्षरश: ''सब्त का एक'' वाक्यांश के कारण यहूदी लोग सप्ताह के दिनों की बात सब्त के सम्बन्ध में करते थे। सब्त सप्ताह का सातवां दिन था (निर्गमन 20:10; व्यवस्थाविवरण 5:14), अर्थात सप्ताह का अन्तिम दिन था। सब्त के बाद के दिन (रविवार) को ''एक सब्त'' कहा जाता था। सोमवार को ''सब्त का दो'' कहा जाता था। यीशु सब्त के दिन नहीं बल्कि सप्ताह के पहले दिन अर्थात रविवार को यदि ''सब्त का एक'' में जी उठा था, जिसका अर्थ है ''सब्त के बाद का दिन'' (मत्ती 28:1; मरकुस 16:1, 2; लूका 24:1, 2; यूहन्ना 20:1)।

घटनाओं की यह कड़ी कुछ महत्वपूर्ण सच्चाइयों की पुष्टि करती है:

- त्रोआस में चेले सप्ताह के पहले दिन प्रभु-भोजन खाने के लिए इकट्ठा होते थे।
- धार्मिक पृष्टभूमि में, आरम्भिक कलीसिया ''रोटी तोड़ना'' का इस्तेमाल प्रभु-भोज के अर्थ में से करती थी।
- कुछ धार्मिक इकट्ठे आराधना के उद्देश्यों के लिए किए जाते थे।
- एक विशेष उद्देश्य यानी प्रभु-भोज को खाने के लिए सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा होते थे। पौलुस ने इस इकट्ठा का इस्तेमाल यरूशलेम में प्रचार करने के लिए किया।
- पौलुस इकट्ठा होने के लिए कलीसिया के लिए सात दिन त्रोआस में देखता रहा, जो उन्होंने प्रभु-भोज खाने के लिए रविवार किया।

मसीही लोग एक विशेष दिन, यानी हर सप्ताह के पहले दिन (1 कुरिन्थियों 16:2), अर्थात रविवार को अपनी आमदनी के अनुसार देने और प्रभु-भोज में भाग लेकर यीशु को महिमा देने के लिए इकट्ठा होते थे। इनका साप्ताहिक रूप में चंदा देने का उद्देश्य यह था कि जब पौलुस आए तो उस समय चन्दा न करना पड़े। यह इस प्रमाण को पक्का करता है कि सप्ताह का पहला दिन कलीसियों के आम तौर पर इकट्ठा होने का समय था।

ऐतिहासिक पुष्टि

प्रेरितों के बाद के लेखक इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि मसीही लोग सब्त के बजाय रविवार यानी सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा होते थे। सेंवथ डे एडवेंटिस्ट चर्च की संस्थापक एलिन जी व्हाइट की शिक्षा (1827-1915), की शिक्षा इसके विपरीत थी। इतिहास बेशक हमें बताता है कि मसीही लोग कॉन्सटैंटाइन से पहले लगभग तीन सदियों तक सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा होते थे (ईस्वी सन लगभग 280-337), पर वाइट ने लिखा, कि कलीसिया के लिए इकट्ठा होने के लिए रविवार को आधिकारिक दिन बनाने वाला वही है।

> चौथी शताब्दी के पहले भाग में सम्राट कॉन्सटैंटाइन में रविवार को पूरे रोमी साम्राज्य को सार्वजनिक बनाते हुए एक आदेश जारी किया। ... परन्तु परमेश्वर का भय मानने वाले बहुत से भयभीत लोग भीगे-भीगे रविवार को पवित्रता के एक स्तर वाला होने के सम्बन्ध में मानने तो लगे पर अभी भी वह प्रभु के दिन को वास्तविक सब्त के रूप में ही मानते थे ओर चौथी आज्ञा को मानते हुए इसे पूरा करते थे।[10]

> रविवार को पहली बार सार्वजनिक रूप में लागू करने का पहला नियम कॉन्सटैंटाइन ने बन्द किया [321 ईस्वी]। [11]

कौंसटैंटाइन ने न रविवार को आराधना को लागू किया और न ही मसीही लोगों के इकट्ठा होने के दिन से शनिवार में बदला। परन्तु उसने रविवार को अर्थात उस दिन को जिसमें मसीही लोग इकट्ठा होते थे ताकि वे और अन्य धार्मिक समूह रविवार का आराधना के विशेष दिन के रूप में मना सकें। वह साम्राज्य के विभिन्न धर्मों के प्रति शहनशील था। कॉन्सटैंटाइन द्वारा बनाई गई नीति 313 ईस्वी में लिसिन्युस के साथ कम में आई जिसे ''मिलान का आदेश'' कहा जाता है, जिसने सबको धार्मिक स्वतन्त्रता दी थी।

> 311 की तरह नई नीति केवल सहनशीलता की नहीं; न ही इसने मसीहियत को साम्राज्य का धर्म बनाया। इसने विवेक की पूर्ण स्तन्त्रता का प्रचार किया, मसीहियत को रोमी साम्राज्य किसी भी धर्म के साथ पूरी तरह से कानूनी बराबरी दी।[12]

ज्योफ़री डब्ल्यू ब्रोमिले ने ऐतिहासिक प्रमाण को संक्षिप्त किया कि आरम्भिक मसीही लोग रविवार के दिन इकट्ठा होते थे और निष्कर्ष निकालते थे, ''केवल इन वचनों को इकट्ठा लेने का यह अर्थ मिलता है कि आरम्भिक मसीही सप्ताह के पहले दिन अर्थात पुनरुत्थान के दिन आराधना के लिए इकट्ठा होते थे।''[13] हम स्वयं उन ऐतिहासिक दस्तावेज़ों की जांच करते हैं जो हमें आरम्भिक कलीसिया के व्यवहारों की समझ देते हैं।

पहली शताब्दी के अन्त के निकट प्लाइनी टोटा के नाम से प्रसिद्ध रोमी अधिकारी (ईस्वी 63-113) ने सम्राट ट्राजन के नाम एक पत्र भेजकर मसीही सभाओं के विषय में लिखा:

> ... उन्हें दिन चढ़ने से पहले एक ठहराए हुए दिन इकट्ठा होने की आदत थी, जब वे मसीह के लिए वैकल्पिक आयतों में ऐसे गाते जैसे ईश्वर के लिए हो और अपने आप किसी बुरे कृत्य के लिए नहीं बांधने की शपथी ली थी, पर कभी कोई धोखा करने, चोरी या व्यभिचार, अपनी बात को झूठ न कहने, एक भरोसे से इनकार न करने की शपथ लेते जब उन्हें उसे बताने के लिए कहा जाए; जिसके बाद बालक होना और फिर भोजन में भाग लेने के लिए इकट्ठा होना उनकी प्रथा थी-परन्तु सामान्य और ताजा किस्म का खाना।[14]

फिलिप्प शेफ़ की कलीसिया के इतिहास में पत्र के एक भाग का अंश कोष्टकों में व्याख्या के साथ जोड़ा गया है:

> इसके अनुसार मसीही लोग एक ठहराए हुए दिन (रविवार) दिन चढ़ने पर इकट्ठा होते थे, मसीह के लिए एक दूसरे के साथ गाते थे जैसे परमेश्वर के लिए हो। ... इसके बाद (शाम को) वे फिर से मिलता, सामान्य और ताज़ा भोजन (the agapae) खाने को।[15]

प्लाइनी का पत्र जो एक सांसारिक स्रोत है आज का बाइबल से बाहर का प्रमाण देता है कि मसीही लोग एक विशेष ठहराए हुए दिन पर दो बार इकट्ठा होते थे, एक बार तो दिन चढ़ने से पहले और दूसरा बाद में। दिन स्पष्ट नहीं है परन्तु सामान्य निष्कर्ष यही है कि वे काम पर जाने से पहले दिन के आरम्भ में प्रभु-भोज मनाते थे, जो वे यहूदी समुदाय के सब्त के दिन नहीं करते होंगे। फिर, दिन भर काम करने के बाद वे फिर से शाम को खाने के लिए इकट्ठा होते थे। उनकी सभा के द्वारा ''ठहराया हुआ दिन'' सब्त का नहीं, रविवार है जैसा कि उसके बाद के इतिहास से भी पुष्टि होती है।

द डिडेके (मूलतया, ''शिक्षाएं'') 90 ईस्वी और 150 ईस्वी के दौरान लिखी गई मसीही समुदायों के निर्देशों की बाइबल से बाहर की पुस्तक है। यह कहती है, ''और प्रभु के अपने दिन इकट्ठे हो और रोटी तोड़ों और धन्यवाद करो। ...''[16] यह स्रोत ''प्रभु के अपने दिन'' के बाद को पड़ता है पर यह सब्त के दिन को मनाने के साथ रविवार को इकट्ठा होने में अन्तर नहीं करता।

अन्ताकिया की कलीसिया के एक अगुवे और प्रेरित यूहन्ना के छात्र इग्नेशियस (लगभग 35 ईस्वी-लगभग 107 ईस्वी) ने लिखा:

> इसलिए यदि वे लोग जिन्हें बातों के प्राचीन ढंग से लाया गया है, एक नई आशा के पास आए हैं, *अब सब्त को नहीं मानते, बल्कि प्रभु के दिन को मनाने में रहते हैं,* इसमें हमारे जीवन फिर से उसके द्वारा और उसकी मृत्यु के द्वारा निकले हैं।[17]

इसलिए हमें सप्ताह के पहले दिन को मनाए जाने और सब्त को मानने में स्पष्ट अन्तर मिलता है, पर विशेष रूप से आराधना की बात नहीं।

130 ईस्वी के आस पास लिखी, *द एपिस्टल ऑफ़ बरनबास* में है:

> अन्त में उसने उन से कहा; *तुम्हारे नये चांद और तुम्हारे सब्तों को मैं सहन नहीं कर सकता।* तुम देखो कि उसके कहने का क्या अर्थ है; [मुझे] तुम्हारे वर्तमान सब्त नहीं बल्कि वह सब्त स्वीकार्य है जिसे मैंने बनाया, अर्थात जिस में, मैंने सब बातों को विश्राम दे दिया है, मैं आठवें दिन का आरम्भ करूंगा जो एक और संसार का आरम्भ है। जहां हम भी *आनन्द के आठवें दिन को मानें, जिसमें यीशु भी मरे हुओं में से जी उठा, और महिमा पाकर स्वर्ग में ऊपर उठाया गया।*[18]

''आठवां दिन'' स्पष्टतया सप्ताह के सातवें दिन का अगला यानी नये सप्ताह का पहला दिन होना था। बरनबास के कथन के अनुसार ''प्रभु का दिन'' वाक्यांश के बिना भी रविवार को आनन्द के रूप में मानती हैं क्योंकि यह यीशु के पुनरुत्थान पर और बाद में मुख्य स्वर्गारोहण का दिन बताते है।

आरम्भिक महत्वपूर्ण मसीही अपोलोजिस्ट जस्टिन मार्टिन (100-165 ईस्वी) ने रविवार की आराधना और सब्त को माने जाने में अन्तर करते हुए स्पष्ट कथन कहे:

> मेरे मित्रो, इसके अलावा कोई और बात नहीं है, जिसमें हम पर आरोप लगाया जाता है कि हम व्यवस्था के बाद में नहीं रहते हैं और तुम्हारे बाप दादाओं की तरह हमारा शरीर में खतना नहीं हुआ है और तुम्हारी वजह सब्त तुम को नहीं मानते हैं।[19]

> और उस दिन जिसे रविवार कहा जाता है, नगरों या देहात के रहने वाले सब लोग एक स्थान पर इकट्ठा होंगे और जब तक समय अनुमति दे प्रेरितों या भविष्यवक्ताओं के लेख और स्मरण पढ़े जाते हैं। ... फिर हम इकट्ठे उठकर प्रार्थना करते हैं और जैसा कि हम ने पहले कहा, जब हमारी प्रार्थना समाप्त हो जाती है तो रोटी और दाखरस और पानी लाए जाते हैं। ... और सबको बांटा जाता है। ... परन्तु रविवार ही वह दिन है जब हमारी सब की आम सभा होती है, क्योंकि पहला दिन ही है जब परमेश्वर ने, अन्धकार और पदार्थ में अन्तर लाया, संसार को बनाया; और उसी दिन यीशु मसीह जो हमारा उद्धारकर्त्ता है मरे हुओं में से जी उठा।[20]

लगभग 180 ईस्वी में प्रेरितों की गतिविधि का अपोक्रिफल (परमेश्वर की प्रेरणा रहित) रिकॉर्ड *एक्ट्स ऑफ़ पीटर* में स्पष्ट किया गया है कि सब्त खत्म हो गया है:

> पौलुस ने कई बार यहूदियों के विद्वानों को यह कहते हुए उनका सामना किया था कि उसी मसीह, जिसके ऊपर तुम्हारे बाप-दादाओं ने हाथ डाले, उनके सब्तों और उपवासों और पवित्र दिनों और खतने को और मनुष्यों की शिक्षाओं तथा शेष परम्पराओं को मिटा डाला।[21]

अति सम्मानित और परिश्रमी प्राचीन मसीही लेखकों में से एक रोमी टर्टुलियन (160-220 ईस्वी) ने लिखा कि मसीही लोगों द्वारा अब सब्त का दिन नहीं मनाया जाता था।

> हमारे द्वारा जिनके लिए सब्त के दिन अजनबी हैं।[22]

> इसका अर्थ यह हुआ कि शारीरिक खतने और पुरानी व्यवस्था के मिटने की जहां तक बात है, इसे इसके विशेष समयों में खत्म होने को दिखाया गया है, वैसे ही सब्त का मनाया जाना ही अस्थाई बताया गया है।[23]

कैसरिया के यूसबियुस ने जिसे ''कलीसिया के इतिहास का पितामह'' कहा जाता है, ने 300 ईस्वी के लगभग लिखा। इबयोनियों (व्यवहारिक यहूदी गुटों) के दो समूहों में मसीही सहभागिता में दूसरों से अन्तर करते हुए, यूसबियुस ने लिखा:

> [अबियोनियों के एक और समूह की तरह] वे भी सब्त को और यहूदियों के अन्य प्रबन्ध का उन्हीं की तरह मानते हैं, पर दूसरी ओर वे हमारी ही तरह पुनरुत्थान को स्मरण करने के लिए प्रभु के दिन को भी गाते हैं।[24]

आदरणीय शैफ़ के इतिहास में लिखा है:

दूसरी शताब्दी में विश्वव्यापी और निर्विवाद रविवार को मनाए जाने के इस तथ्य से समझाई जा सकती है कि इसका आरम्भ केवल प्रेरितों के ही तरफ़ से हुआ। ऐसा मनाया जाना और सराहे जाने के योग्य है, क्योंकि कॉन्सटैंटाइन के युग से पहले इसे कोई सरकारी समर्थन नहीं था, और अधिकतर मसीही लोगों की निम्न समाजिक स्थिति अपने काफिर स्वामियों और नियोक्ताओं की निर्भरता को ध्यान में रखते हुए कई असुविधाओं से जोड़ा या होगा।[25]

विली रोडोर्फ ने निष्कर्ष निकाला:

प्राचीन कलीसिया में रविवार का दिन प्रभु-भोज को मनाने के लिए स्थानीय कलीसिया के इकट्ठा हुए बिना सोचा भी नहीं जा सकता था। रविवार का दिन बिना प्रभु-भोज के बिल्कुल कुछ नहीं था; प्रभु-भोज ने आराधना में एक मुख्य स्थान बना लिया था इसके आस पास आराधना की अन्य बातों को स्थान मिलता था। अन्य समयों में प्रार्थना या सामान्य भोजन के लिए लोग इकट्ठा होते थे, पर प्रभु-भोज के लिए केवल रविवार को।[26]

साप्ताहिक मनाया जाना

विभिन्न धार्मिक गुट प्रभु-भोज को अलग अलग समयों और अन्तरालों में लेते थे, जैसे वार्षिक, अर्धवार्षिक, त्रैमासिक, मासिक, साप्ताहिक, या जब मन चाहे। कुछ लोग विवाह के समय, बपतिस्मे के समय और अन्य अवसरों पर इन प्रतीकों में भाग लेते हैं। नया नियम सप्ताह के पहले दिन पर समय नहीं बताता कि उसे कब लिया जाना है।

दूसरी शताब्दी के दौरान प्रभु-भोज रविवार के दिन लिया जाता था, जिसका अर्थ यह होगा कि यह लिया जाना प्रेरितों की शिक्षा के आधार पर था। नहीं तो अफ्रीका से रोम और पूरे रोमी साम्राज्य में कलीसियाएं बिना किसी अपवाद में भोज लेने के लिए रविवार को क्यों इकट्ठा होतीं? यीशु ने प्रेरितों से कहा था कि वे उन लोगों को जो बपतिस्मा लेते हैं ''वे सब बातें मानना'' सिखाएं ''जिनकी मैंने तुम्हें आज्ञा दी थी'' (मत्ती 28:20), और आरम्भिक कलीसिया प्रेरितों की शिक्षा को मानती थी (प्रेरितों 2:42)। रविवार का दिन ही था जिसमें वे प्रभु-भोज में भाग लेकर प्रभु को स्मरण करने के लिए इकट्ठा होते थे, इस कारण रविवार को साप्ताहिक रूप में इसका लिया जाना बिना किसी संदेह के प्रेरितों के अधिकार से था।

जब हमें कोई ऐसा व्यवहार मिलता है, जिसका आरम्भ यीशु ने किया था वह और पहली और दूसरी शताब्दियों में उसे आरम्भिक कलीसियाओं द्वारा हर जगह माना जाता हो, तो सुरक्षित तरीका उनके नमूने के अनुसार करना होता है। प्रभु-भोज के सम्बन्ध में, आरम्भिक कलीसिया के इकट्ठे होने की तरह वैसे ही इकट्ठा होना सप्ताह के अन्य दिनों में से चुनने से बेहतर रास्ता है।

कलीसिया के पहली दो शताब्दियों का विवरण बताते ऐतिहासिक लेखों में रविवार के अलावा किसी और दिन प्रभु-भोज लिए जाने का कोई उद्धाहरण नहीं मिलता। प्रभु-भोज लिए जाने के अन्य समय न तो नये नियम के अधिकार और न आरम्भिक कलीसिया के नमूने के आधार पर लिए जाते हैं।

सारांश

प्रमाण इतना अधिक है कि कलीसिया के आरम्भ से ही मसीही लोग अपनी आमदनी में से देने और प्रभु-भोज को मनाने के लिए साप्ताहिक तौर पर रविवार के दिन इकट्ठा होते थे। वे प्रार्थनाओं (प्रेरितों 4:23-31; 6:6; 12:12); और निर्णय लेने (प्रेरितों 4:23; 14:27); के अन्य उद्देश्यों के लिए अन्य समयों पर भी इकट्ठा होते थे। परन्तु चन्दा करने और प्रभु-भोज के लिए उनका विशेष दिन रविवार अर्थात सप्ताह का पहला दिन ही था (प्रेरितों 15:6, 7)।

टिप्पणियां

[1]विल्ली रोडोर्फ, *संडे,* अनुं. ए. ए. के. ग्राहम (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1968), 199. [2]एवरेट फर्ग्यूसन, *अर्ली क्रिश्चियंस स्पीक* (अबिलेन, टैक्सस: बिब्लिकल रिचर्स प्रैस, 1981), 70. [3]''ध्यान दें कि '*kuriakos*' एक विशेषण है, जिसके लिए कोई समानांतर मेल खाता अंग्रेजी शब्द नहीं है। नये नियम में एकमात्र और हवाला 1.10 है'' (एल्फ्रेड मार्शल, *द आर. एस. वी. इंटरलीनियर ग्रीक-इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1970], 687)। [4]वही, 957. [5]जी. एच. वाटरमैन, ''लार्ड'स डे,'' *द ज़ौंडरवन पिक्टोरियल इनसाइक्लोपीडिया आफ़ द बाइबल,* संपा. मैरिल सी. टैनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1975), 3:965. [6]ईस्बन टी. बेकविथ, *द अपोक्रलिप्स ऑफ़ जॉन* (न्यू यॉर्क: मैकमिलन कं., 1919; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1967), 435. [7]देखें यशायाह 2:12; यिर्मयाह 46:10; विलापगीत 2:22; यहेजकेल 13:5; योएल 1:15; आमोस 5:20; ओबद्याह 15; सपन्याह 1:8; मलाकी 4:5. [8]देखें 1 कुरिन्थियों 1:8; 5:5; 2 कुरिन्थियों 1:14; 1 थिस्सलुनीकियों 5:2; 2 पतरस 3:10. [9]बेकविथ, 3:435. [10]एलन जी. व्हाइट, *द ग्रेट कन्ट्रोवर्सी बिटवीन क्राइस्ट एंड सेटन* (माउंटेन व्यू, कैलिफोर्निया: पैसिफिक प्रैस पब्लिशिंग एसोसिएशन, 1948; रिप्रिंट, 1948), 53.

[11]वही, 574. [12]विलिस्टन वाकर, *ए हिस्ट्री ऑफ द क्रिश्चियन चर्च,* 3रा संस्क., संशो. रॉबर्ट टी. हैंडी (न्यू यॉर्क: चार्ल्स स्क्रिबनर'स सन्स, 1970), 101. [13]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, ''लार्ड'स डे,'' *द इंटरनैशलन स्टैंडर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया,* संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986), 3:159. [14]प्लायनी *लैटर्स* 10.96. [15]फिलिप शैफ, *हिस्ट्री ऑफ द क्रिश्चियन चर्च,* अंक 1 (न्यू यॉर्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर एंड कं., 1869), 382. [16]*डिडेक* 14:1. [17]इग्नेशियस *मैगनेशियंस* 9. [18]बरनाबास *एपिस्टल* 15:8, 9. [19]जस्टिन मार्टिर *डायलॉग विद ट्रायफो* 10:1. [20]जस्टिन मार्टिर *1 अपोलोजी* 67:3.

[21]*एक्ट्स ऑफ पीटर,* 3:1. [22]टर्टुलियन *ऑन आइडोलेटरी* 14:6. [23]टर्टुलियन *ऐन आंसर टू द ज्यूस* 4:1. [24]यूसबियुस *एक्लेसिएस्टिक्रल हिस्ट्री* 3.27. [25]फिलिप शैफ. *हिस्ट्री ऑफ़ द क्रिश्यिन चर्च,* अंक 1, 3रा संशो. (न्यू यॉर्क: चार्ल्स स्किब्नर'स सन्स, 1890), 478-79. [26]रॉर्डोफ, 305.